

या इकां॥ नं० अचलु नासि कार्य या इकां॥ नं० अचलु र्य या इकां॥ नं० अचलु व
र्य या इकां॥ नं० अचलु पा इकां॥ नं० अचलु नूपा र्य या इकां॥ नं० अचलु चलि का
र्य या इकां॥ **वलि**॥ नं० अचलु नूपा दि नव चलि कार्य र्द वलिं गृह्ण २ स्यात्॥ **आ**
नूपा नादि॥ विन्दू मूर्त्ता दु स यत्॥ **उप**॥ शौ स्यात् १०॥ **स्तु**॥ ३॥ **धन वा**
मूर्त्ता॥ **मूर्त्ता** गन न्या स॥ **आ स न य**॥ नं० अचलु म वा स ना य या इकां॥ **आ न** आ स
म वा स नूपा च धान दंष्ट्रा क नालिनी न क च र्धु व नी द वी य वा कू स म स नि रा ज
कार्य सूर्य का टि स म य र्ग पिं ग ज पिं ग क भा च न का द्वा च जिला

को क की ल नू पी च उ ड्ड क भी च ष ड्ड ना । स प स र्वा रू पां गी हा ज ह न ल
पि तां॥ मू लु मा ला ध ना नो डी आ द्या स क टि रू प णी । खं ड्ड रु ट क रु र्क च उ म नू
ख र्ग म म व च क र्त्तिका पा ल धा नी च यु त द रु स्ति त म्भ नी । उ वं का त्या म हा द वी
सा च का च न भा मु त॥ **रू या ऊ नि**॥ नं० अचलु श्री सिद्धि वा मू लु र्य या इकां॥ ३॥
धन वलि॥ नं० अचलु श्री सिद्धि वा मू लु र्य र्द म या र्थे धू प दी प ने च द वा
मू लु र्य वलिं गृह्ण २ र्ग म किं क नू २ स वी वि द्यां न्ना म य २ स र्व ना ग यु भा किं क नू २
र्द वलिं यु ति भा नं गृह्ण २ र्द रु ट स्यात्॥ **धन य नि वा न य**॥ नं० अचलु र्य या इ

थानभूलवलीसपंचवलिभ्राष्ट्राहनादिमहाभा

[illegible][illegible]

सत आत्म तत्वं अध्यामि मिवाहं स्वाहा ॥ **कृष्णनाकाया ३** ॥ कौं कौं विद्या तत्वं
साधयामि मुनिश्चायानवुविद्या उन्मकृतं यायं संहा वय २ ल **कौं** श्री नाना
यने सहिताय शुद्ध विद्यादि भवामि वा नं गीत त्यात्मन विद्या तत्वं अध्यामि
मि मिवाहं स्वाहा ॥ **पदनाकाया ३** ॥ सौंः श्री भिवत त्यात्मन भिवत त्वं अध्यामि
यने च नश्चायानवु भिवत जन्म कृतं या यं संहा वय २ पार्वति भवामि व
सहिताय गच्छादि मिवा नं दितं त्यात्मन भिवत त्वं अध्यामि मिवाहं
स्वाहा ॥ **दाकाया ३** ॥ नै कौ सौंः ~~नै कौ सौंः~~ सर्वत त्वं अध्यामि सर्व

नै कृतं यायं संहा वय २ यन म्वापन भिव सहिताय धन एषादि मिवा नं च
द्विं मरु त्यात्मन सर्वत त्यात्मन सर्वत त्वं अध्यामि मिवाहं स्वाहा ॥ ॥
धन धन आकाया ३ ० आकाया ३ ॥ श्री सत्यतान्मवाहन याय ॥ ॥ नमः
श्रुति कार्य ॥ श्रीरु नव उवाच ॥ श्री संवत्स मनु लार्क कमय द सहिता नन्द भक्तिः
सूरि मा सूर्य त्याय च रुक्म कमकल सकलं पञ्चकं च नमः ॥ च त्यानाय च
का न्यं यून नयि च रुक्म मातृ भ्रातृ लिख कं दया ह्यै मूर्ति मध्य हस खरु ल कला
विन्दू पृष्ठा खमू दा वृद्ध को मान वालं यन म भिव कला च कदवी क्रमा न्याः श्री

नार्थं च न्ययूयात् नवनव कलितं यन्मदहं तु मानं ॥ गितं त्योसि द्वावता नं य
थम कलियूगेन कार्कन साधिका नं ॥ तस्मात्तै यत्तु मिथ्या नवयूय यत तेषु
मध्यदिन ह्ये ॥ सतान गच्छिषिं तुं कस्य यदसकलं साउभाना कुमानं आदो
इमं तु सर्वं पलिरुम विमलं युष्मद्वा वविन्द ॥ आदावस्मदभानं कलक
मसकलं मधुसूतानयुर्वी ॥ संस्कारं रकुमन यत्तु मसदय कलियुद्धि
मिता नै ॥ मध्यविश्रामसु मियु रवमन रुयं यत्तु यं साधिका नं संसृष्टं य
नरुत्तमं नम तिष्ठु नव नं रं ववं श्री कृष्णे ॥ धन विद्वत्तारा ॥ अकृत पूषान

॥ द्वावता नं यत्तु मसानि उग्रपिरय कवि उग्रतूमा नीना साय मूचन सा
धिना रुवन् मूछ स्यादि दममो नं दुर्गदवी सिनारुवन् ॥ धन विद्वत्तारा ॥
न सक्त मूक्त सक्तं विनरुवन् ॥ धन विद्वत्तारा ॥ आसन पूजा ॥ जैन
नासनाय यादू कां ॥ धन ॥ नीलं पिं गज तं रीमं मूल खट्वां गध निर्वी ॥ कया ल
उमन वा य रुसं कृत यतिं रुत ॥ धन विद्वत्तारा ॥ जैन ॥ दौ दौ दू दः कृत या सायः
यादू कां ॥ ३ ॥ वलिं ॥ दौ कृत या साय दं वलिं गृह २ खाहा ॥ वदू क ॥ आसन पू
जा ॥ जैन ॥ मयू नासनाय यादू कां ॥ धन ॥ कृष्णं गं सै र्य रुसा यो कया ल दधु धा नि

सुद्धरुटिकसंकाशं श्रीनरुचलमौलिकं वनदारुयहसं व. मधु
मालाधनरुचं च वं व्यासा मारुदवं मिष्टिका माथ सिद्धिदं ॥ ५ ॥
नपुष्पनमः ॥ ॥

कुं हं हः ॥ ५ ॥ एतज्जयाचमृतीसायनमः ३ ॥ जें ॥ रु २ ॥ नूनन्यमकिरेनवान

दीनाधियतथ श्रुं श्रीसंयुक्तलसायपाइकां ॥ जें ॥ अं नडचलुनवच
निद्रासूर्यपाइकां ॥ जें ॥ अयादिमृष्टआनीतिशोपाइकां ॥ चका
न्यादिमृष्टमागीकथोपाइकां ॥ अस्यांमादिमृष्टं नवाशोपाइकां ॥ ००
यादिदमसाकयावशोपाइकां ॥ आदित्यादिनवग्रहशोपाइकां ॥ युतिय
दादितिथिशोपाइकां ॥ कर्तिकादिनक्षत्रशोपाइकां ॥ विष्णुंरादिशा
शोपाइकां ॥ भस्वादिद्वादशनाशिशोपाइकां ॥ ववादिसककन(त)शोपाइ
कां ॥ मृदुशोपाइकां ॥ अथस्ममादिमृष्टविनेत्रिविशोनमः ॥ बहिश्यादिसक

अखिलो नमः ॥ अन्ननादि अष्टकलेना ॥ अखिलो नमः ॥ गंगाय नमः ॥ यमनाथ न
मः ॥ सनखो नमः ॥ कावलो नमः ॥ कोमिको नमः ॥ गंधर्वो नमः ॥ नर्मदा
थो नमः ॥ आयमखो नमः ॥ वृक्ष नमः ॥ विष्णु नमः ॥ वृडा यनमः ॥ ॐ श्वना
यनमः ॥ नदामि वायनमः ॥ अमृति सायनमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ ययू जा ॥ ॥
धनस ॥ गनयू जा ॥ ॐ नमः ॥ अश्वस्तमायनमः ॥ वहि ॥ शासायनमः ॥ रुद्रमन्त्र
मः ॥ विरिष नायनमः ॥ रुपायनमः ॥ यत्र नूनामायनमः ॥ मार्क
नमः ॥ वहि ॥ वासादि मन्त्र निवा रथो वरिष रुद्र स्वाहा ॥ ॥ धन द्रु
॥ अवा द्रु ॥ धन मजा ॥

नमः ॥ अकनासनायनमः ॥ वलि ॥ सिधनमूनयू जा ॥ कर्म
नायनमः ॥ श्री श्री नमः ॥ वलि ॥ अवा द्रु ॥ धन ॥ धानि मूखो ॥ ॥ ध
न कं रुपू जा ॥ ॐ नमः ॥ अयनयू जा ॥ ॐ नमः ॥ काजासनायपाइकां ॥ ॐ नमः
अनादि अष्टकलेनायपाइकां ॥ धन ॥ ॐ नमः ॥ साकोन सनिरादवी ययू ना
नसतयू जा ॥ सर्वत्र विवितां गी ॥ त्वं वि का हत विग्रहा ॥ अष्टादश भुजा दिवा नाना
युक्त न नायू जा ॥ नानात्रय धनी द विरुं सावी नानाविशत ॥ खं यपासां कसे सवा क
पास कृनि मधु ॥ नथां गंवतथा ययू नवमं उ वनयुद ॥ रुद्रकं धनू पा मीव ॥

षट्को गङ्गा कमलु नू ॥ मूलमङ्गल नर्वनं च गङ्गा नालि चारु न कनः मलु संवष्टयित्वा
उ नदि रूता विमपिता । प्रसंति पातका सर्वं चामृता मृता का इवा ॥ ध्यानयुष्म न
मः ॥ **पञ्चाङ्गलि** ॥ जें ॐ श्रीं ॥ रे नवानन्द श्रीमहाविश्वनाथ स्वामी ॐ कौकुलकं रा
यवा इकां ॥ जें ॐ श्रीं नूड ॥ बहुदिन वचतु कार्य पा इकां ॥ नू व ॥ श्रीं आनादि नू
ष्टमात्रिक लो नमः ॥ सां ॥ हृदयाय नमः ॥ सिनय नमः ॥ मिषाय नमः ॥ कवचा
य नमः ॥ नूकाय हृद ॥ **वलि** ॥ श्री वारुनादि ॥ ध्यान मूडा ॥ **रुति कं रूपा** ॥ ॥
धन वनूपा ॥ **आसनयूपा** ॥ निनऊ न कम वा सनाय नमः ॥ जें ॐ श्रीं सां सां सें

ॐ संसत्ता काम सावित्री कीदवी श्री पा इका यूरया मि नमः ॥ **वलि** ॥ ख वलि मूडा ॥
॥ ३ ॥ वनू मलुनाय पा इका ॥ जें ॐ श्रीं नो नो नू ॐ नू ऊ स ना र सावित्री कीदवी श्री
पा इकां ॥ **वलि** ॥ नि वलु मूडा ॥ ॥ जें ॐ श्रीं नूया ॥ तीता सनाय पा इकां ॥ जें ॐ श्रीं
तां तां नू नू तां ता सावित्री की श्री पा इकां ॥ **वलि** ॥ **आवाय** ॥ वीज मूडा ॥ ॥ जें ॐ श्रीं
समया नू का सनाय पा इकां ॥ जें ॐ श्रीं दं सर्व मा द दाय नू खा रु ॥ **वलि** ॥ **आवा**
य ॥ **धन मूडा** ॥ **रुति वनूपा** ॥ ॥ **धन कोमो निया** ॥ जें हृदयादि न ना म ॥
आसनयूपा ॥ जें ॐ श्रीं आनादि नू हृयूक्ति का सनाय नमः ॥ जें ॐ श्रीं सनाय न

मनिनायना। नत्तमा ला वि विरु ह। हान मा ला व सं वि ताः॥ मू द्य द स र ग
का न्ना दि वा व र्का ग रू पि ता खं ज वा नं त थ च कं। व कां क म व न्ना ध नं उ
म नं सै न पा रं च द द्दि ए न वि ना जि तां॥ रु त कं च न रु रं च ग ज घ नू स
सा रि तं। पा सै त ऊ नि रु रं च ख द्वां ग क म या स कं। वि नू मू द्वा त थ शि
दिं धा य न रु ग व ति य नां सि हा स न स मा नू धी म हि खा पा द त र्जि ता॥
म हि खा सू त नि रु कि स र्व द स वि ना सि नि म सा धा द स रु रं च ख द्वां
ग लु म नू वि ना नू द च लु प च लु च च लु य य लु ना सि का। च लु च लु च

ते र्व व च लु नू पा ति च लु का न व मि वा ग्र न लु च म धा क्क म् न पु ला दि
ता॥ ना व ना नू नू म रु धा नी ला लु का च ध मि का पि ता च पा लु ना रु या
नू रि च क्का रु नि रि ता म हि धा थ म मां म की त ल्क ल ग्र रु म र्हि का क्क
या र्थ ल न य क्का वा उ ग्र च लु दि तः कु मा त्थ वं धा ला म रु द वी म रु रु
ग व ति न मा यु त॥ धा न य र्थ न मः॥ **ध न र्थ या ऊ लि**॥ जे न मा रु का ला य वा द
कां॥ **ध वि या ऊ डा स क त न**॥ जे न धू उ ग्र च लु द र्थ पा रू का य रु या मि॥ जे न र्थ ऊ ना
रू य द धू उ ग्र च लु न त म दि नि कू रु स दा न रु रं लां मां रु रं मृ लू रु न न म सा

हा ॥ नमः श्री कौ वलुवा अथ नमः श्री कौ पाइकां ॥ नमः श्री कौ वलुवा
नमः श्री मलाविद्याना अथ नमः श्री उग्रचक्रार्थपाइकां ॥ नमः श्री उग्रचक्र
अथ नमः श्री दत्तदीपिमली ॥ तन्नाचलियुवा दया ॥ एव वलियुक्
२ स्त्राहा ॥ **धनश्रवणयज्ञा ॥** नमः श्री नृपचक्रार्थपाइकां ॥ नमः श्री
युवचक्रार्थपाइकां ॥ नमः श्री उग्रचक्रार्थपाइकां ॥ नमः श्री अं अं वलुनायिका
पाइकां ॥ नमः श्री उं उं वलुचक्रार्थपाइकां ॥ नमः श्री उं उं वलुवर्णपाइकां ॥ नमः श्री
उं वलुनार्थपाइकां ॥ नमः श्री नृः नृतिचक्रार्थपाइकां ॥ **पूजायाकथ**

नं वलि ॥ नमः श्री नृपचक्रार्थपाइकां वलियुक् २ स्त्राहा ॥ **नृवाहनादि**
॥ **यानिमूलाकन ॥** ॥ **कात्यायनियूगा ॥** **श्रमनयूगा ॥** नमः श्री यमाश्रमनायपा
इकां ॥ नमः श्री सिंहाश्रमनायपाइकां ॥ महिखाश्रमनायपाइकां ॥ **अन ॥** उं श्री
॥ नमः श्री उं कौ स श्री मारु दुर्जचक्रार्थपाइकां ३ ॥ **वलि ॥** यनिवानयू
॥ **ऊयार्थनमः ॥** विऊयार्थनमः ॥ नृजितार्थनमः ॥ नृमनाजितार्थनमः ॥ नृ
मूर्धनमः ॥ रुं रुं नमः ॥ मारुर्नमः ॥ मारुर्नमः ॥ **वलि ॥** ऊयादिया
जितार्थ वलियुक् २ स्त्राहा ॥ **नृवाहनादि ॥** **यानिमूला ॥** ॥ **धनश्रवणयज्ञा**

त्रियुगा ॥ **आसनयुगा** ॥ येनासनायपाइकां ॥ **उं न** सिंहासनायपाइकां ॥
महिषासनायपाइकां ॥ **धनधान** ॥ **योनिसि** ॥ **उं न** रोगवति श्रीचतुर्मा
सायनि कुम्भस्थानमः ३ ॥ **वसि** ॥ **पनिवानयुगा** ॥ **उं न** मंत्रवक्रान्ताया
इकां ॥ **उं न** केंसारास्थायपाइकां ॥ **उं न** वेंकोमास्थायपाइकां ॥ **उं न** टेंवसुस्थाय
पाइकां ॥ **उं न** तेंवानास्थायपाइकां ॥ **उं न** येंल्लास्थायपाइकां ॥ **उं न** येंयामल्ला
स्थायपाइकां ॥ **उं न** नेंमहालक्ष्मीपाइकां ॥ **वसि** ॥ **उं न** मंत्रवक्रान्तायादिभूषमा
हिकथोवसिं नृकृत्स्न ॥ **आवाहनादि** ॥ **यानिमूला** ॥ ॥ **दवीसखवस**

अथयानयुगा ॥ **उं न** कोंकण्यासायपाइकां ॥ **उं न** श्रीकौकसयणवद्रकनाथा
यपाइकां ॥ **उं न** लूंकलगतस्थनायपाइकां ॥ **उं न** श्रीसिद्धिवाभुस्थायपाइ
कां ॥ **वसि** ॥ **उं न** कणादिचतुष्कानकण्यानायवसिं नृकृत्स्न ॥ **आवाह**
नादि ॥ दंदतर्जनि नरुथानिमूर्धा ॥ ॥ **धनदससाकपानयायुगा** ॥ **उं न**
ल्लास वज्रहस्ताय गजवाहनायपाइकां ॥ **उं न** आग्नय भक्तिहस्ताय कान
सनायपाइकां ॥ **उं न** यमाय पासहस्ताय महिषाभनायपाइकां ॥ **उं न** नेम
साय स्वभ्रह्माय यतवाहनायपाइकां ॥ **उं न** वनूषाय पाभहस्ताय मकरा

सिद्धि विद्या विद्या नव नव क मरु नना स आ यवा दयात् ॥ वलि ॥
मय ॥ नारायण ॥ आवा द्य आनि मरुदा ॥ ॥ अन ॥ पुष्प कालिय नने ॥ आ ॥
म य ॥ आ अ न म कि क म सा स ना य पा इ का ॥ हुं हुं वरुः युग म सु स
ना य पा इ कां ॥ हुं हुं चरु व द म दा स ना य न मः ॥ हुं हुं ॐ द्या दि द से ला क
या न म सु स ना य न मः ॥ हुं हुं सृष्टि सिद्धि यु ल य म न्या म ना य पा इ कां ॥ हुं
हुं व द्य विष्णु नूत ॥ ॐ न न म द्या मि व रुं न व यु ता ला य पा इ कां ॥ हुं हुं म हा
मि वा यु ता स ना य पा इ कां ॥ ॐ न ॥ ^{व नो देवि} धन पु या ॥ ॐ हुं सिद्धि कला लिङ्ग

क्रीं हुं क्रीं हुं नमः स्वाहाः श्री गुरु श्रु कालि द वी या इ कां ॥ ३ ॥ म य गु न ॥
ल लो जी वि द्यु क काल सं क र्ष नि धि म हा न ना कालि य वा द या ॥ ॐ न
न न न ना वलि ॥ आ वा द्य ॥ ॐ न यानि म हा आनि म हां ॥ ॥ अन
म कान स वृ ना ॥ म न ख द ग न ना स ॥ नै क्री श्री नै क्री श्री म हा वि य न म
न नो म गु ह यां न मः ॥ आ ना ॥ नै क्री श्री क्री क्री ग र्ज नी ॐ यां न मः ॥ आ ना ॥
क्री श्री श्री म हा मा यां न मः ॥ द थ ना ॥ नै क्री क्री श्री श्री श्री म ना मि का यां न
मः ॥ ॐ न ॥ नै क्री श्री क्री क्री कनि धि का यां न मः ॥ द थ ना ॥ नै क्री श्री नै

श्री कवतलकन युष्टा त्यां नमः॥ कनान॥ जे कवती मल्लारियुत्र सुन्दविदु
 ऊ दयायनमः॥ नृगवस॥ क्री क्री गिवस स्वाहा॥ मालस॥ सौः श्री गिखास
 वषट॥ गिवखा॥ सौः श्री कवचा दु यदु॥ कवच॥ क्री क्री नगा ऊ सवोषट
 ॥ गिखास॥ नै क्री मू ऊ माय रुट॥ नृकुन॥ धन युगदु क निसः श्रीचक
 स कुमनय ऊ जायाद रुय॥ जे सौ कायनमः॥ क्री उव स्वाकायनमः॥ सौः
 सौ कायनः॥ धन जायाडा॥ नृगवस मूड॥ सुवर्ग्या या का न॥ नत्तया
 ऊ॥ धक थडा मनन नरा नय माहागा इ न मान श्या डा चा क लाव या काडा

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ३ स्वर्गपुत्राय नमः ॥ ३ अनन्तदीपाय नमः ॥ ३ कृष्णदाय नमः ॥ ३ कामधेनवे नमः ॥ ३ विद्म
मयाकाशाय नमः ॥ ३ अथर्ववेदिकाय नमः ॥ ३ अथर्ववेदिकाय नमः ॥ ३ अथर्ववेदिकाय नमः ॥
॥ ३ अथर्ववेदिकाय नमः ॥ ३ अथर्ववेदिकाय नमः ॥ ३ अथर्ववेदिकाय नमः ॥ ३ अथर्ववेदिकाय नमः ॥
॥ ३ अथर्ववेदिकाय नमः ॥ ३ अथर्ववेदिकाय नमः ॥ ३ अथर्ववेदिकाय नमः ॥ ३ अथर्ववेदिकाय नमः ॥
॥ ३ अथर्ववेदिकाय नमः ॥ ३ अथर्ववेदिकाय नमः ॥ ३ अथर्ववेदिकाय नमः ॥ ३ अथर्ववेदिकाय नमः ॥

॥ २ नी नील निधय नमः ॥ धनं नृपं हनि धीयूता ॥ ॥ सायान या दशम
 दानया जव खवम युता ॥ ॐ कौ श्रीं कौ कम दवाय नमः ॥ ३ न नरु नमः ॥ ३
 व सुकाय नमः ॥ ३ या पी ले नमः ॥ ३ कौ श्री ग कि ग व य त य नमः ॥ दान
 मा दश ॥ ॐ कौ श्रीं ॐ कौ श्रीं ॐ न मा रु ग व ति मा तं गी श्व रि स र्व रु न म मा रु नि नि
 स र्व म ख नं नि नि कौ कौ श्रीं स र्व ना रु व र्ग क रि स र्व कृ य नृ ष व र्ग क रि स
 र्व रु नि रु व र्ग क रि स र्व स र्व व र्ग क रि स र्व ला कं म व म मा न य सा रु ॥
 श्रीः कौ ॐ कौ श्रीं ॐ मा तं गी नमः ॥ ^{सायान दूथ} ॥ ॐ कौ श्रीं श्रीं स श्रीं रु
 सर्व रु रु ग व र्ग क रि

न यो नमः ॥ ३ दं द रु ले नमः ॥ धनं नि दान या यु न ता ॥ ॐ कौ श्रीं स स
 न ख ले नमः ॥ ३ श्रीं म हा स श्री नमः ॥ ३ मां मा या र्थे नमः ॥ ३ इं इ र्ग र्थे नमः ॥
 ३ विं वि रु ले नमः ॥ ३ रुं रु रु का ले नमः ॥ ३ र्थं स ले नमः ॥ ३ र्थं सा रु र्थे नमः
 ॥ ३ रुं रु रुं क र्थे नमः ॥ ३ र्थं म र्थे नमः ॥ ३ र्थं सा रु र्थे नमः ॥ ३ र्थं वा गी श्व
 र्थे नमः ॥ धनं दाना दियुता या य धना ॥ ॥ धन न लि धन पि ० य जा या य ॥
 ॐ कौ श्रीं मा वा न म को नमः ॥ ३ र्थं म रु का र्थे नमः ॥ ३ र्थं म ल यु कि र्थे नमः ॥ ३ र्थं
 म न मा य नमः ॥ ३ र्थं क र्थे नमः ॥ ३ र्थं व ना रु र्थे नमः ॥ ३ र्थं यु धि र्थे नमः ॥

३ वां वासुदेवाय नमः ॥ ३ श्रीमद्भक्तसागराय नमः ॥ ३ वनतद्विषाये नमः ॥
 ३ नन्दनाथाय नमः ॥ ३ स्वर्णपर्वताय नमः ॥ ३ कदम्बगुह्याय नमः ॥
 ३ कश्यपाय नमः ॥ ३ मन्दानवातिकाय नमः ॥ ३ नलवदिकाय नमः ॥
 ३ चिकामन्यादि नवनलमन्दपाय नमः ॥ ३ श्वयत्तुजाय नमः ॥ ३ मधु
 लोको नवतिकाय नमः ॥ **धनसिंहासनयुगा** ॥ नैको श्रीमन्महायतय नमः ॥ ३
 इन्द्राय नमः ॥ ३ संसनसत्वे ॥ ३ द्वाकृपासाय नमः ॥ **ध्यानदूध**
संयुगा ॥ ३ मलाचकाय नमः ॥ **मन्त्रान्यात्रयः काटियागज नलमय**

द्वाकृपासाय नमः ॥ ३ द्वाकृपासाय नमः ॥ ३ द्वाकृपासाय नमः ॥

द्वाकृपासाय नमः ॥ ३ द्वाकृपासाय नमः ॥ ३ द्वाकृपासाय नमः ॥
 न निर्मनरायाडावाकः **सिंहासनराय** **धनसिंहासनयाभालसंयुगा** ॥
 नैको श्री क्रीयुधिविषयतय वृषयत्तमये कर्मचपादाय नमः ॥ नैको
 श्रीको सलिलतत्वाविषयतय दिव्ययत्तमये कर्मचपादाय नमः ॥ नैको श्रीको
 तज्जम्बुत्वाविषयतय नृदयत्तमये कर्मचपादाय नमः ॥ नैको श्रीको
 विषयतय ॥ ३ श्वयत्तमये कर्मचपादाय नमः ॥ नैको श्रीकोः श्रीका मन्त्राविषय
 तय सदा निवयत्तमये ययर्का सनाय नमः ॥ नैको श्री धर्माय नमः ॥ ३ रुद्र
 नाय नमः ॥ ३ वैष्णवाय नमः ॥ ३ वैश्याय नमः ॥ ३ ब्रह्मर्माय नमः ॥ ३ ब्र

[illegible][illegible]

ॐ हनि २॥ ॐ हसं निदि ता रुं व २॥ ॐ हसं निनु दारु व २॥ नृगधि
 शनं कन २ समयु जगृहा त ४ कृ नव गु क्तु न॥ अव गु (६) न॥ रुट् धा या ड
 द वी वि त क थ अ क्रा स या स्वा मान॥ थ न न्या स त य॥ आ स न, सम र्य या मि नमः॥
 ॥ थ न ध्यान॥ मा ति क्रा ता सु व र्ण न व म मि मू क र्ण न क व रु जि न र्ण नाना क ल्या
 क लां गी क रि न कू च त तां स्म न व क्रा व वि न्यां॥ वा ल न का र्द उ या भां क म व न वि
 धृ तां न त्र सिं हा स न स्त्रां आ मां का मां क वा सां स क ल स न मं तां स न तां स न द
 नीं रा व या मि॥ के ३ रु ३ स ध श्री म हा रि य न स न्द नी नि ला श्री या ड कां यु र
 नं रि य ना द वी वि म रु क्री का म ग्व नी धि म दि सौं त न

समस्त कर्मगुणगर्षणी समस्त कर्मगुणगर्षणी

यामि॥ थं प द पा ड, पू र्णां न रि या का ड, मूल क सा (१) न न र्ग य न या य॥
 नं क्री सौं कु श्री श्री म हा रि य न स न्द नि द र्थ ग र्थ या मि नमः॥ थ नः
 न व मू डा क न॥ डां स व स क रि नी मू डा॥ डौं॥ स र्व वि डा वि नि म
 डा॥ क्री॥ स र्व क र्प नि मू डा॥ र्वे॥ स र्व व स क नि मू डा॥ स॥ सः
 आ मा दि नि मू डा॥ को॥ स र्व म हा र्क म मू डा॥ कुं॥ स र्व रि ख
 अ मू डा॥ कुं॥ स र्व ख च लि मू डा॥ नें॥ स र्व वि उ मू डा॥ र्वे॥ थ न
 मू डा क॥ थ न य न म नि या या दि न स्ना न या च क॥ नें जी श्री

विष्णु नमः॥

कृष्णः श्रीमहाप्रियव्रतसूक्तनिपाशनीयदयामिनमः ॥ अर्घ्यानि यानि
 स्याद्यथाय ॥ नैकांशं नैकांशं कउ हउ सउ श्रीसूक्तार्थं नार्थः सम
 यामिस्वाहा ॥ धवीया निनस अर्घ्याय ॥ ॥ मूर्तमूर्तनं ॥ श्रीसूक्तं नो चम
 निसमर्थयामि स्वाहा ॥ मुखसायान न्मूचमनया चक ॥ ॥ मूर्तनं ॥ श्री
 सूक्तार्थं मधुपकं समर्थयामि स्वाहा ॥ मुखस सायान ^{धन कलि सायन} मधुपकं विद्या ॥
 धन गायत्री नस्तानया चक ॥ नैकियनादा वी विद्मरु क्ली कामय नी
 धीमहि शोः ततः किन्नयु चादया ॥ धन नस्तानया चक ॥ ॥ ध

वसुं विविधं मिषादि अर्घ्यं अर्घ्यं का प्रणि ४
 नवन्दनादितयाय ॥ श्रीखलु कंक मयूकं कर्णवं मृगनाहिउं । विस
 यनार्थं दवसि गृहानमनूनयनं ॥ धन वरु समन ॥ विनय निमहावि
 न विनरुस्मसमं विनं ॥ सा सा कर्षव दर्वी सिद्धना नमूरुमं ॥ धन सि
 न्नया ॥ मूर्तनं मूर्तनं तया ॥ नानायस्य सगन्धानि मालाद्या विविधानि च ।
 दवर्धनि गृह्णतु मया रुक्मानि वदितं ॥ धन माला स्नान सहित न द्याय ॥
 कर्तुं पताका यंच पताका तय ॥ इच्छितय ॥ वरु मय ॥ कर्तुं तम इच्छिनमः ॥ त
 ममानका तय ॥ धनननि ॥ धन यत्र यत्र यनिता न आह्वान ॥ समिन्नेय यत्र

[illegible]

दधयसयूगा ॥ धनतुनकनः ॥ ॥ धनननिनवा^वननयूगा ॥ श्रीचक्र
या. पिथरुसयूगा ॥ श्रीचक्रया पिथरुसयूगा ॥ चक्रनप्रचक्रायनमः ॥
कौश्रीं मृनिमादि. दधसिद्धिआणिनी र्थी श्री पाइकां पूजयामि. तपयामि
नमः ॥ कडाया दाना. चाना. दधनान. मृदूतखानकायाडा. कडातयूगाय
य. खवन. तपनयाय. सद्धिआदाडा ॥ ॥ दधरुसयूगा ॥ ॥ कौश्रीं मृद्वच
उनप्रनखास. खेदनायादि. मृदूमाहका. मृसितां मादि. मृदूकरनय
श्रीपूइकां. पू. ॥ ॥ दधनखास ॥ ॥ कौश्रीं मृद्वचउनप्रनखास.

